अनामिका

वार्षिक पत्रिका

वर्ष 2001-2002

सकलडीहा पोस्ट ग्रेजुएट कालेज

सकलडीहा, चन्दौली

अनामिका

संरक्षक

डॉ० लक्ष्मी नारायण पाण्डेय

प्राचार्य

प्रधान संपादक

श्री सन्त कुमार त्रिपाठी

सह-संपादक

डॉ० कैलाशनाथ मिश्र

डॉ० प्रमोद कुमार सिंह

सकलडीहा पोस्ट ग्रेजुएट कालेज

सकलडीहा, चन्दौली

वर्ष २००१-२००२

कालेज प्रबन्ध समिति के पदाधिकारी एवं सदस्य

सत्र २००१-०२

१.	डॉ० युगेश्वर पाण्डेय	अध्यक्ष
२.	डॉ० अशोक राय	उपाध्यक्ष
३.	डॉ० जलालुद्दीन	उपाध्यक्ष
४.	डॉ० बृजेश चन्द गुप्त	उपाध्यक्ष
५.	श्री राम प्रसाद मिश्र	उपाध्यक्ष
६.	श्री राजीव रंजन यादव	प्रबंधक
७.	श्री आनन्द किशोर सिंह	मंत्री
८.	श्री शिव सकल सिंह	सदस्य
९.	श्री हीरा सिंह	सदस्य
१०.	श्री मनोज कुमार	सदस्य
११.	श्री कमला पति पाण्डेय	सदस्य
१२.	श्री हरिद्वार चौबे	सदस्य
१३.	डॉ० लक्ष्मी नारायण पाण्डेय	पदेन सदस्य
१४.	प्राध्यापक प्रतिनिधि	सदस्य
१५.	प्राध्यापक प्रतिनिधि	सदस्य
१६.	गैर शिक्षक कर्मचारी प्रतिनिधि	सदस्य

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख/कविता	नाम	पृ.सं.
1.	कालेज प्रबन्ध समिति के पदाधिकारी एवं सदस्य		2
2.	अध्यक्षीय उद्बोधन	डॉ0 युगेश्वर	5
3.	प्रबन्धक की कलम से	राजीव रंजन यादव	6
4.	अपनी बातें अपनों से	डॉ. लक्ष्मी नारायण पाण्डेय	7
5	संदेश	रमेश कुमार	9
6.	संपादकीय	संत जी	10
7.	स्नातकोत्तर महाविद्यालय की अध्यापक सूची		11
8.	शिक्षणोत्तर कर्मचारी सूची		12
9.	हार्दिक अभिनन्दन	इफ्तिखार नाजिम	13
10.	अर्थ की महत्ता	हरनाम सिंह	14
11.	फौजी	प्रेमचन्द सिंह कुशवाहा	14
12.	ग़ज़ल	ममता सिंह 'अश्क'	14
13.	वर्तमान भारत की आधुनिक बातें	मो. फारुक अंसारी बी. ए. I	15
14.	अमेरिका के तालिवान पर ऐसा गुस्सा आयल	धनंजय पाण्डेय	15
15.	यकीन कर	पूनम जायसवाल बी. ए. I	16
16.	नसीहत	सत्येन्द्र कुमार जायसवाल	16
17.	ग़ज़ल	योगेश कुमार पाण्डेय बी. ए. I	17
18.	स्वराज से रामराज	तेज बहादुर प्रसाद बी. ए. I	17
19.	माई के महत्व	हिमांशु पाण्डेय बी. ए. I	18
20.	बचवा क सहूर	सुमन पाण्डेय बी. ए. I	18
21.	भौरा एक कलियां चार	मुकुन्द तिवारी बी. ए. I	19
22.	कभी खुशी कभी गम	शमीम अहमद बी. ए. I	20
23.	जमाने की व्यस्तता	सन्देश पासवान बी. ए. I	21
24.	गमें मुहब्बत	अब्दुल कलाम बी. ए. I	21
25.	एक रोगी की सलाह	रामविलास पाण्डेय बी. ए. I	22
26.	ग़ज़ल	आभा पाण्डेय बी. ए. I	22
27.	दहेज प्रथा	अजीत कुमार बी. ए. I	23
28.	चुटकुले	इमरान खान बी. ए. I	23
29.	पागल	अरविन्द कुमार मिश्र बी. ए. I	24
30.	शिवभजन	कमलेश कुमार दूबे बी. ए. I	24
31.	प्रेम ईश्वर से मिलने का एक मात्र मार्ग है	कमलेश कुमार दूबे बी. ए. I	25
32.	मोह का पर्दा	रीति पाण्डेय बी. ए. I	26
33.	कुर्सी की आत्मकथा	दिनेश कुमार सिंह बी. ए. I	27
34.	जिन्दगी	रेनु चौबे बी. ए. I	27
35.	शुभ कामनाएं	ओमप्रकाश (टिल्लू) बी. ए. I	28
36.	वह चला गया	योगेन्द्रनाथ पाण्डेय बी. ए. I	29
37.	क्या आप भिखारी हैं	सत्यप्रकाश गौतम बी. ए. I	31
38.	विद्यार्थी का साहस	गौतम कुमार मौर्य बी. ए. I	32
39.	सोचा भी न था	हरिओम गुप्त बी. ए. I	32
40.	स्वतंत्रता	ब्रजेश कुमार सिंह बी. ए. III	33
41.	महिमा दौलत की	महेन्द्र यादव बी. ए. II	35
42.	उसके प्यार की इच्छा	नितिन तिवारी बी. ए. II	37
43.	अमर प्रेम कहानी	सुरेन्द्र कुमार तिवारी बी. ए. II	39
44.	आज का मंत्र	अनूप कुमार सिंह बी. ए. I	42
45.	मूली की शादी	रामविलास राम बी. ए. III	43
46.	दिन भूल न पाया	संजय विश्वकर्मा बी. ए. II	43
47.	मैं औरत हूँ	शिवदयाल यादव एम. ए. I	44
48.	मुस्करा दो	धर्मेन्द्र पाण्डेय बी. ए. II	45
49.	बड़ा महत्व होता है	सुग्रीव कुमार बी. ए. II	46
50.	जीवन की सार्थकता श्रेष्ठ कर्म में है	अतुल सिंह बी. ए. III	47

क्र.सं.	लेख/कविता	नाम	पृ.सं.
51.	बापू मैं नेता बनूँगा	इम्तियाज अहमद एम. ए. I	48
52.	देश भक्ति चिन्तन	मुरलीधर पाण्डेय बी. ए. III	50
53.	मीठे-मीठे सपने	प्रमोद कुमार हरपाल सिंह	51
54.	तोड़ दी दीवार	इफ्तिखार नाजिम बी. ए. III	52
55.	अपने बेगाने	अभय नारायण शर्मा बी. ए. II	52
56.	डॉ0 भीमराव अम्बेडकर	श्री विलास नागर बी. ए. I	53
57.	आज के नेता	मनोज कुमार यादव बी. ए. I	54
58.	साहित्य से जीवन है	ब्रजेश विश्वकर्मा बी. ए. I	55
59.	ज्ञान निर्झर	आभा पाण्डेय बी. ए. I	55
60.	खींचा सेहरा	अर्चना सिंह बी. ए. I	56
61.	दिल के जज्बात	शरद चन्द्र बी. ए. III	56
62.	युवाओं में नशे का प्रकोप	सन्तोष कुमार विश्वकर्मा बी. ए. II	57
63.	माँ का दूध	आनन्दराज मिश्र बी. ए. II	57
64.	दहेज की ज्वाला	जितेन्द्र राय बी. ए. I	58
65.	भावगीत	उपेन्द्रनाथ सिंह बी. ए. I	59
66.	मुहब्बत	रिजवाला बी. ए. I	60
67.	कालेज स्टूडेन्ट	अजीत कुमार यादव बी. ए. II	60
68	जीवन की कुन्जी	चन्दा तिवारी बी. ए. II	61
69.	किसी का आना	कु0 अनीता बी. ए. II	61
70.	जुतवा उतारी का	कु0 स्नेनी खरवार बी. ए. II	62
71.	पुकार जेहाद की	शशिकान्त गौड़ बी. ए. I	62
72.	युद्ध के बाद	अनु0 प्रेमेन्द्र कुमार राय बी. एड. विभाग	63
73.	शिक्षा	प्रमोद कुमार भारती बी. ए. I	64
74.	झण्डा ऊँचा रहे हमारा	इन्द्रजीत मिश्र बी. ए. II	65
75.	बस बहुत हो गया क्षमादान	इन्द्रजीत मिश्र बी. ए. II	66
76.	दहेज	कु0 पूनम बी. ए. II	66
77.	भगवान का संदेश	प्रीति पाण्डेय बी. ए. II	67
78.	गज़ल	राजू पाण्डेय बी. ए. I	67
79.	हम साथ-साथ हैं	कुलदीप जायसवाल बी. ए. III	68
80.	चिरागे जिन्दगी	कु0 शशिरानी बी. ए. II	68
81.	प्रेम के बदलते रंग	राधिकारमण तिवारी बी. ए. II	69
82.	खां बहादुर खटमलजी	अमरनाथ मौर्य बी. ए. II	70
83.	दोहा	सुनीता पाण्डेय बी. ए. II	71
84.	आने वाली पीढ़ी है डवांडोल	चन्द्रमा प्रसाद विश्वकर्मा एम. ए. I	72
85.	शेरावाली मां की महिमा	अमित कुमार सिंह बी. ए. II	73
86.	जिन्दगी के रास्ते	अमित कुमार सिंह बी. ए. II	73
87.	ब्रह्मचर्य	महेश प्रताप कुशवाहा बी. ए. I	74
88.	हमारा धर्म	कौशल कुमार बी. ए. I	74
89.	दोहा	किरन सिंह बी. ए. I	75
90.	सीमा के प्रहरी	विनोद कुमार गुप्त बी. ए. II	75
91.	तेरी याद	बीना सिंह बी. ए. II	76
92.	बुद्ध वन्दना	अभय कुमार मौर्य बी. ए. II	76
93.	साथी दिल का	श्रीकान्त पाण्डेय बी. ए. II	77
94.	गज़ल	रत्नेश प्रताप त्रिपाठी बी. ए. III	77
95.	आगे आये आज	जयप्रकाश मौर्य बी. ए. II	78
96.	नया साल हो मुबारक	उजियार यादव बी. ए. II	78
97.	हे कली	सन्त कुमार मौर्य बी. ए. I	79
98.	आज के गुरु और चेले	चन्द्रभान मौर्य बी. ए. III	79
99.	छात्र छात्राओं से	सुशीला देवी बी. ए. II	80
100.	गज़ल श्रेष्ठ कर्म में है	कनकलता मौर्या बी. ए. III	80

अध्यक्षीय उद्बोधन

संदेश

वेदांत
सी ३३/७८-४, चन्दुआ,
छित्तुपुर, वाराणसी-२२१ ००२
☎ २२११८३

दिनांक ____________

डॉ० युगेश्वर
अध्यक्ष
प्रबन्ध समिति

मित्रों,

आज शिक्षा का उद्देश्य मात्र अर्थोपाजन हो गया है अर्थकरी विद्या। यह बड़ा ही अशुभ संकेत है। शिक्षा का उद्देश्य आत्मज्ञान होना चाहिए। हम कौन हैं? हमें क्या करना चाहिए? हमारे कर्मों से सृष्टि का कितना कल्याण होता है?

वर्तमान शिक्षा लोभ मूला है। इसी से समाज में काम, क्रोध, लोभ त्रैगुण बुराइयाँ बढ़ रही हैं। पैसा, पैसा। हाय पैसे की रट लगी है। ज्ञान हमारी आत्मा का स्पर्श नहीं कर रहा है। यह शिक्षा केवल वस्तु दे सकती है। इसमें विवेक देने की सामर्थ्य नहीं है। विवेक सबसे बड़ी चीज है। पशु और मनुष्य का मूल अन्तर विवेक का है। विवेक जितना साधन है। उतना ही साध्य भी। विवेक ही परमात्मा है। अपने में, अपने सहयोगियों, छत्रों में विवेक उत्पन्न करने का प्रयत्न करें। विवेक को आत्मिक जागरण का उद्देश्य बनाएँ। आत्मा ही सब कुछ है। आत्म जागरण ही स्वतंत्रता, समता, भ्रातृत्व है।

शुभ कामनाओं सहित

आपका
युगेश्वर

प्रबन्धक की कलम से

राजीव रंजन यादव
प्रबन्धक

स कलडीहा महाविद्यालय की पत्रिका "अनामिका" सत्र २००१-०२ प्रकाशित होने जा रही है। मैं महाविद्यालय के प्राचार्य, गुरुजन, छात्रों एवं संपादक मंडल को साधुवाद देता हूँ।

महाविद्यालय के प्रबंधन का कार्य मेरे जैसे व्यक्ति के लिए पूर्णरूपेण नया एवं गुरुतर है मुझे ऐसे समय में प्रबन्धक का दायित्व मिला जबकि मेरा सम्पूर्ण परिवार विषाद एवं असह्य दुःख में आकण्ठ डूबा हुआ था फिर भी अपने प्रबन्ध समिति के सम्मानित सदस्यों के निर्णय को ससम्मान स्वीकार करते हुए इस पद को ग्रहण किया और संकल्प लिया कि महाविद्यालय के सर्वांगीण विकास हेतु सदैव तत्पर रहूँगा।

अपने कुछ ही महीनों के कार्यकाल में मैंने प्रजातांत्रिक प्रणाली के आधार पर अपने दायित्वों का निर्वहन किया है। प्राचार्य, गुरुजन, कर्मचारी, छात्र, प्रबन्ध समिति एवं अभिभावक गण सबके अपने अलग-अलग अधिकार एवं कर्त्तव्य हैं। सभी ने अपने दायित्वों का निर्वहन किया है, इसके लिए मैं सबके प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

वैचारिक वैभिन्नता एवं व्यक्तिगत स्वार्थों की वजह से लोगों में मनोमालिन्य का हो जाना स्वाभाविक है। यदि आपस में ऐसा किसी स्तर पर कभी हुआ है तो विश्वास है। लोग इसे भूलकर सेवा भाव अपनाते हुए महाविद्यालय के विकास में अपना सम्पूर्ण योगदान देंगे।मैंने सदैव जाति वर्ण, वर्ग एवं सम्प्रदाय से ऊपर उठकर विधि सम्मत निर्णय लेने का प्रयास किया है।

पत्रिका महाविद्यालय का दर्पण होती है। इसके द्वारा महाविद्यालय के वर्ष भर के क्रिया-कलापों की जानकारी होती है। शिक्षा का उद्देश्य बालक का शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक एवं भावनात्मक विकास करना है। सभीप्रकार के विकास उसके लेखन शैली से परिलक्षित होते है। अनामिका इन उद्देश्यों की पूर्ति में प्रेरणा श्रोत होगी।

मैं पुनः अनामिका के प्रकाशन के शुभ अवसर पर महाविद्यालय के विकास से जुड़े सभी लोगों के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूँ।

अपनी बातें अपनों से

डॉ० लक्ष्मी नारायण पाण्डेय
प्राचार्य

किसी भी विद्यालय की पत्रिका उसके अपने चरित्र का द्योतक होती है। वह निश्चित रूप से उसके सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक एवं साहित्यिक चेतना को प्रतिबिम्बित करती है। विद्यालय एक तरफ तो समाज का लघु रूप होता है तो दूसरी तरफ परिवार का वृहद। वह सामाजिक एवं राष्ट्रीय संस्कृति को संरक्षण प्रदान करते हुए उसके नव निर्माण में अपनी अहं भूमिका निभाता है। वह ज्ञान का अक्षुण भण्डार होने के साथ साथ हृदय पक्ष को भी विकसित करने में सहायक होता है। सहगामी क्रिया कलापों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, खेल कूद एवं अन्य शारीरिक प्रतिस्पर्धाओं के आयोजन से बालकों में बहुमुखी प्रतिभा को विकसित करता है। ग्रामीण अंचल में स्थित सकलडीहा पी. जी. कालेज सकलडीहा, चन्दौली अपने शैशवावस्था से ही बालकों का चतुर्मुखी विकास करता रहा है।

अपने पिछले पैंतीस वर्षों में इसने बड़े ही उतार चढ़ाव के अनुभव किये हैं। हमारे अग्रजों ने महाविद्यालय की आधारशिला रखने के साथ साथ इसको निखारने एवं सुदृढ़ स्वरूप देने का भरपूर प्रयास किया है जिसके परिणाम स्वरूप आज चन्दौली जनपद का यह एक श्रेष्ठतम महाविद्यालय जाना जाता है। सम्प्रति स्नातक स्तर पर कला एवं शिक्षा संकाय की कक्षाओं के अतिरिक्त कला संकाय तीन विषयों भूगोल, हिन्दी एवं राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर स्तर की मान्यता प्राप्त कर कक्षायें चला रहा है। पठन पाठन एवं पुस्तकालय की उपयुक्त व्यवस्था होने से प्रत्येक वर्ष छात्रों का परीक्षाफल उत्तम होता रहा है। निकट भविष्य में अर्थशास्त्र विषय में भी स्नातकोत्तर स्तर तक की मान्यता प्राप्त कर लेने का संकल्प है। भूगोल शिक्षा एवं अर्थशास्त्र विषयों में शोध कार्य भी प्रगति पर है। इस सत्र में अर्थशास्त्र विषय में यू० जी० सी० ने 2 लाख की मेजर शोध वृत्ति डा० श्याम कार्तिक मिश्र के निर्देशन में स्वीकृत किया है। जो अपने आपमें कालेज के लिए सम्मान एवं गौरव का विषय है।

महाविद्यालय में एक वर्ष के अपने कार्यकाल में मैंने अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए महाविद्यालय के विकास के प्रति सदैव सजग रहा हूँ। मेरी सफलता मेरे प्राध्यापक बन्धुओं, कर्मचारियों एवं छात्रों की सफलता है। विभिन्न कक्षाओं में प्रवेश, छात्र संघ का चुनाव एवं विश्वविद्यालयीय परीक्षाओं में सबका सहयोग निरन्तर मिलता रहा है। इसके लिए मैं सबका हृदय से आभारी हूँ। सभी छात्रों को साधुवाद देता हूँ।

महाविद्यालय के सम्पूर्ण जमा खाते बनारस स्टेट बैंक में रहे हैं। पिछले वर्ष सितम्बर महीने में रिजर्व बैंक आफ इण्डिया द्वारा अचानक इसके अस्तित्व को समाप्त कर देने से महाविद्यालय को कुछ दिनों तक आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। हमारे सहकर्मीगण भी इससे प्रभावित हुए। इस आर्थिक विपन्नता के बावूद भी महाविद्यालय के छात्रों उनके अभिभावकों एवं प्रबन्ध समिति के सक्रिय सहयोग से एक कक्ष हिन्दी भवन एवं छात्राओं के कामन रूम का नवनिर्माण किया गया। इसी समय महाविद्यालय के बी. एड. छात्रावास का जीर्णोद्धार भी किया गया। बाउण्डरी वाल एवं मुख्य द्वार को निर्मित कर उसे एक सुरक्षित एवं नवीन स्वरूप प्रदान किया गया। भवनों की बढ़ोत्तरी के साथ साथ काष्ठोपकरणों को क्रय करके कक्षाओं एवं प्राध्यापक कक्षों में बैठने की उपयुक्त व्यवस्था की गयी। महाविद्यालय में विभिन्न खेलों एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। छात्रों ने अन्तर्महाविद्यालयीय एवं अन्तर्विश्वविद्यालयीय टीमों में अपनी सहभागिता भी सुनिश्चित की है।

उपरोक्त उपलब्धियों के साथ साथ महाविद्यालय परिवार को एक असह्य आघात का सामना करना पड़ा जब काल के निर्मम हाथों ने हमारे कर्मठ, कुशल एवं युवा प्रबन्धक को हमसे छीन लिया। प्रबन्धन में निपुण स्वर्गीय श्री अशोक यादव को महाविद्यालय की ही सेवा में अपनी जान गवानी पड़ी। इस महान व्यक्तित्व का नारा था ''योग: कर्मसु कौशलम'' एवं ''श्रमेव जयते'' सदैव महाविद्यालय एवं क्षेत्र के विकास का सपना देखा करते थे। उनका संकल्प था स्नातक स्तर के सभी विषयों में स्नातकोत्तर की मान्यता, स्नातक स्तर पर विधि विज्ञान एवं कृषि विषयों की कक्षायें चलाकर क्षेत्र का सर्वांगीण विकास करना। उनके सिद्धान्तों पर चलकर सपनों को साकार स्वरूप प्रदान करना उनके प्रति हम लोगों की सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

इस विपदा की घड़ी में प्रबन्ध समितिने भूतपूर्व प्रबन्धक के भ्राता श्री राजीव रंजन यादव को महाविद्यालय की प्रबन्ध समिति का प्रबंधक चयनित किया। प्रबंधक श्री राजीव रंजन यादव के प्रबंधन में महाविद्यालय पुनः विकास के पथ पर चलना प्रारम्भ किया है।

इन्हीं उतार चढ़ाव के क्रम में महाविद्यालय अपनी वार्षिकी ''अनामिता'' सत्र 2001 2002 प्रस्तुत करता है। यह महाविद्यालयीय बच्चों की पत्रिका है। उनमें लेखन शैली का विकास करना ही इसका लक्ष्य है। खेद है कि यह प्रबुद्ध प्राध्यापकों के आकर्षण का केन्द्र न बन सकी। जिसे भविष्य में पूरा किया। कनिष्ठा की तरफ इसका झुकाव अधिक रहा, मध्यमा की तरफ कम। आशा है पाठकगण इसे कनिष्ठा के स्थान से ही देखने का प्रयास करेंगे।

ऊँ सन्त

जय सन्त

संदेश

रमेश कुमार
अध्यक्ष
छात्रसंघ
सकलडीहा पी. जी. कालेज
सकलडीहा चन्दौली

प्रिय मित्र,

आपको संदेश देते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि इस वर्ष भी सत्र २००१ व २००२ हमारे कालेज की वार्षिक पत्रिका "अनामिका" प्रकाशित होने जा रही है। इस प्रकाशन से हमारे महाविद्यालय के छात्रों एवं शिक्षकों की दूरी कम होती है तथा सामान्य पठन-पाठन के लिए उचित वातावरण तैयार होता है।

इस पत्रिका के माध्यम से जहाँ हमें अपने विचारों को समाज के सामने, जनता की अदालतमें रखने का मौका मिलता है। वहीं पर व्यक्ति को अपनी नैतिक व्यक्तिगत स्वतंत्रता के माध्यम से अपने सम्मान व स्वाभिमान की रक्षा करने की याद आती है।

इस पत्रिका के प्रकाशन के शुभ अवसरपर मैं महाविद्यालय प्रशासन के समस्त शिक्षक एवं कर्मचारीगण समस्त छात्र भाइयों एवं समस्त छात्रा बहनों (जिन्होंने कि मुझे अध्यक्ष पद की कुर्सी पर आसीन किया) सहित समस्त क्षेत्रीय किसानों, मजदूरों, नागरिकों के प्रति अपनी ओर से तथा छात्रसंघ पी.जी. कालेज सकलडीहा के तरफ से शुभ कामना व्यक्त करता हूँ।

संपादकीय

सन्त

कबीर ने कहा-

ॐ धो ई मुर्दों का गाँव

तब समझ में आया था कि यह संसार मरणशील है। हर जीवन का अन्त निश्चित है। लेकिन आज समझ में आता है कि संसार में जीवन है ही नहीं। यह संसार केवल मुर्दों का गाँव है

मरी हुई आँख, मरे हुए सपने
मरे हुए फूल, मरी हुई खुशबू
मरे हुए आदमी, मरी हुई आदमीयत
मरे हुए गीत, मरे हुए स्वर

मरे हुए अक्षर संसार मृत अक्षरों की शब्द रचना है।
हर शब्द अपने अर्थ का जीवन तलाश रहा है
भाव के श्मशान में।

जालिम अपनी तलवार से मासूम गर्दनों पर खूनी रेखा खींच देता है। आतंकवाद की सुर्खी को मासूम खून चाहिए। मरी हुई माँ की मुर्दा छाती से सटा हुआ नवजात अबोध बच्चा शान्ति स्थापना का प्रतीक है। शान्ति स्थापना का दुग्धाभिषेक इसी मुर्दा दूध से होता है। जालिम की खूनी लकीर के नीचे शान्ति की लम्बी खूनी लकीर अपनी स्थापना की विशदता को रेखांकित कर जाती है। एक हजार मारने के जुल्म के जवाब में दस हजारी मृत्यु से शान्ति स्थापना होती है। बर्बरता और सभ्यता का भेद यही मृत्यु भेद है। फूल डाली से तोड़कर बूट से मसल दिया गया यह बर्बरता है।

फूल डाली से तोड़कर जूड़े में सजा दिया गया यह सभ्यता है, मानवता है।

फूल तो दोनों हाल में मृत्यु दण्ड पाता है। डाली से तोड़ना उसकी हत्या है अब लाश को चाहे फूकों चाहे गाड़ो। चाहे टाट का कफन दो चाहे रेशम का। फूल की तो हत्या दोनों तरफ से है। अन्तर मृत्यु के बाद के अन्तिम संस्कार में है। क्या भाषा है- नाम है जीवन बीमा और वादा है। मौत के बाद का।

मृत्यु के अचल श्यामपट्ट पर चाक से लिखी इबारत का नाम जिन्दगी है, पूरी हैसियत सिर्फ डस्टर लगने भर की है।

सब कुछ मर गया है यार

घर में गृह तंत्र मर गया, देश में जनतंत्र मर गया, व्यक्ति में हृद्तंत्र मर गया, लगता है परमतंत्र मर गया। यहाँ सिर्फ लाख की शिनाख्त होती है। प्रमोशन के लिए जीवित गरम गोश्त की दावत अगर जीवन का जश्न है तो तेरही किसको कहते हैं? सारा दूध मशीन से सुखवाकर बच्चे के मुँह में टिकिया डालकर दूध का काम चलाने वाली को माँ कहना है तो पूतना किसे कहें?

कोख के बच्चे को अल्ट्रासाउण्ड के बाद मारा जा रहा है। छाती के दूध को मशीन से मारा जा रहा है। कहाँ से जीवन आयेगा। हर तरफ निरोध ही तो लगे हुए हैं।

सारे निरोध की तोड़कर एक पैदाइश हुई है अनामिका

नवजात को जीवन की दुआ दें

अनामिका का नाम संस्कार तो आपको ही करना है

स्नातकोत्तर महाविद्यालय की प्राध्यापक सूची

डॉ० लक्ष्मी नारायण पाण्डेय
प्राचार्य
एम. ए. (राजशास्त्र) पी.एच.डी.

(अ) कला संकाय

१. डॉ० हरिकृष्ण पाण्डेय,	एम.ए. (समाजशास्त्र) पी.एच.डी.	रीडर
२. डॉ० पारसनाथ पाण्डेय,	एम.ए. (भूगोल) पी.एच.डी.	रीडर
३. डॉ० रविन्द्र राम त्रिपाठी,	एम.ए. (मनोविज्ञान) पी.एच.डी.	रीडर
४. डॉ० भुवनचन्द्र पन्त,	एम.एस,सी. (सै० अध्य०) पी.एच.डी.	रीडर
५. श्री सन्त कुमार त्रिपाठी,	एम.ए. (हिन्दी)	प्रवक्ता
६. श्री विजय कुमार पाणडेय,	एम.ए. (भूगोल)	प्रवक्ता
७. श्री प्रह्लाद सिंह यादव,	एम.ए. (स०शा०), बी.एड., डी.पी.एड.	रीडर
८. डॉ० श्यामनारायण राम,	एम.ए. (भूगोल), एल.टी., पी.एच.डी.	रीडर
९. डॉ० प्रदीप कुमार श्रीवास्तव,	एम.ए. (समाजशास्त्र), पी.एच.डी.	रीडर
१०. डॉ० प्रमोद कुमार सिंह,	एम.ए. (अंग्रेजी) पी.एच.डी.	रीडर
११. डॉ० अवधेश कुमार उपाध्याय, (अवकाश)	एम.ए. (मनोविज्ञान), पी.एच.डी.	रीडर
१२. डॉ० श्याम कार्तिक मिश्रा,	एम.ए. (अर्थशास्त्र), पी.एच.डी.	रीडर
१३. श्री अरुण कुमार उपाध्याय,	एम.ए. (राज० शा०)	प्रवक्ता
१४. डॉ० शिवसहाय सिंह यादव,	एम.ए. (भूगोल) पी.एच.डी.	,, ,,
१५. डॉ० दया निधि सिंह यादव,	एम.ए. (हिन्दी) पी.एच.डी.	,, ,,
१६. डॉ० उदय शंकर झा,	एम.ए. (संस्कृत) पी.एच.डी.	,, ,,
१७. डॉ० इन्द्रदेव सिंह,	एम.ए. (अर्थशास्त्र) पी.एच.डी.	,, ,,
१८. श्री दुष्यन्त सिंह,	एम.ए. (प्रा० इतिहास)	,, ,,

(ब) शिक्षा संकाय

१. डॉ० सभाजीत चौबे,	एम.ए., एम.एड., पी.एच.डी.	रीडर एवं प्रभारी
२. डॉ० चन्द्रभूषण द्विवेदी,	एम.ए., एम.एड.,पी-एच.डी.	रीडर
३. डॉ० श्रीमती शारदा शर्मा,	एम.ए., एम.एड., पी-एच.डी.	रीडर
४. श्री विजय प्रकाश पाण्डेय,	एम.एस,सी. एम.एड.,	प्रवक्ता
५. श्री गुलाबचन्द्र शुक्ल,	एम.ए., एम.एड., एम. फिल.	,, ,,
६. श्री विन्धेश्वरी राम त्रिपाठी,	एम.ए., एम.एड.	,, ,,
७. डॉ० रामनाथ लाल,	एम. ए., एम.एड., पी-एच.डी.	रीडर
८. श्री नाथू राम शर्मा,	एम.एस-सी.,एम.एड.	प्रवक्ता

९.	श्री प्रमेन्द्र कुमार राय,	एम.एस-सी., एम.एड.	प्रवक्ता
१०.	श्री सुरेन्द्र प्रसाद पाण्डेय,	एम.एस-सी., एम.एड.	प्रवक्ता
११.	....		रिक्त

उपरोक्त वरीयता सूची कार्यालय अभिलेखानुसार

शिक्षणेत्तर कर्मचारी-सूची

पुस्तकालय-	श्री अर्जुन मिश्र-	पुस्तकालयाध्यक्ष
	श्री कैलाश राम-	आशुलिपिक
	श्री अखिलेश पाण्डेय-	आंकिक
	श्री ईश्वर चन्द्र गुप्ता- बी.एड.	प्रयोगशाला सहायक
	श्री लालवहादुर सिंह-	सैन्य विज्ञान प्रयोगशाला सहायक
	श्री मुर्तजा अंसारी-	पु० लिपिक
	श्री स्वामी नाथ पाण्डेय-	भूगोल प्रयोगशाला सहायक
	डॉ० अनिरुद्ध कुमार पाण्डेय-	मनोविज्ञान प्रयोगशाला सहायक
	श्री रामनारायण प्रसाद-	सहायक लिपिक
	श्री अजीत कुमार मिश्रा-	सहायक लिपिक
	श्री दीपक कुमार दूबे-	सहायक लिपिक
परिचारक वर्ग-	श्री लालजी प्रसाद-	दफ्तरी
	श्री बृजमोहन प्रसाद-	परिचारक
	श्री केशवानन्द पाण्डेय-	परिचारक
	श्री सुमन्त चौबे	परिचारक
	श्री मोहन राम-	परिचारक
	श्री दुवा प्रसाद-	परिचारक
	श्री दयाशंकर पाण्डेय-	चौकीदार (परिचारक)
	श्री गुप्ता-	मेस्तर (सफाई कर्मी)
	श्री छोटू प्रसाद-	परिचारक
	श्री श्यामलाल-	परिचारक
	श्री वाष्णेय प्रसाद-	परिचारक
	श्रीमती दुर्गा देवी-	परिचारिका
	श्री मुराहू राम-	परिचारक
	श्री भोजू राम-	परिचारक
	श्रीमती कान्ती देवी-	परिचारक
	श्री रामधनी पाण्डेय	(परिचारक)
	श्री हीरालाल-	परिचारक
	श्री अनिल कुमार यादव-	परिचारक

राष्ट्रगान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता ।
पंजाब सिन्धु, गुजरात मराठा,
द्राविड़ उत्कल बंग ।
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा,
उच्छल जलधि तरंग ।
तब शुभ नामे जागे,
तब शुभ आशीष माँगे ।
गाहे तब जय गाथा,
जन-गण-मंगलदायक जय हे ।
भारत-भाग्य विधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय, जय, जय, जय हे ।

महाविद्यालय-वन्दना

अन्नत आलोक विश्वमूर्ते,
सफल हमारी ये साधना हो ।
न हो दीनता न हो पलायन,
स्वदेश सेवा की भावना हो ।
हमारे जीवन के पथ दुर्गम,
बने हमारे विकास साधन ।
ये आत्मा-बल हो हमारा सम्बल,
हमारे जीवन की प्रेरणा हो ।।